डॉ. धर्मा यादव

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी साहित्य)
एम.फिल., पीएच.डी., नेट (यू.जी.सी.)
बी.पी.एड. (शारीरिक शिक्षा)
सी.डी.पी.एड. (योग में डिप्लोमा)

अध्यापन : 9 वर्षों से कानोडिया पी.जी. महिला महाविद्यालय जयपुर में कार्यरत

प्रकाशन :
- राजस्थान विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार बी.ए. द्वितीय वर्ष हेतु पुस्तक 'हिन्दी उपन्यास एवं एकांकी' (2015)
- आजादी के अमर सेनानी
- राष्ट्रीय गीतमाला
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में साहित्यिक व आलोचनात्मक लेख एवं समीक्षाओं का नियमित प्रकाशन

सम्प्रति :
- सहायक आचार्य (हिन्दी)
कानोडिया पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर
- सह-शैक्षणिक प्रभारी
राजस्थान लेखिका साहित्य संस्थान, जयपुर

₹ 320.00

978-81-7711-611-3

नाट्य भाषा की परख

डॉ. धर्मा यादव

नाट्य भाषा की परख

डॉ. धर्मा यादव

Scanned with CamScanner

नाट्य भाषा की परख

डॉ. धर्मा यादव

प्रकाशक

साहित्यागार

धामाणी मार्केट की गली,
चौड़ा रास्ता, जयपुर

प्रथम संस्करण
2018

ISBN
978-81-7711-611-3

मूल्य
₹ 320.00/- रुपये मात्र

लेजर टाइपसैटिंग
लोकेश कम्प्यूटर, जयपुर

मुद्रक
शीतल प्रिन्टिंग, जयपुर

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

शुभकामना

नाट्य भाषा पर शोध एक श्रमसाध्य कार्य है जिसे डॉ. धर्मा यादव ने पूरी लगन व श्रमपूर्वक साधा है। आम बोलचाल की भाषा से साहित्य की भाषा भिन्न होती है और साहित्य की अन्य विधाओं से नाट्य भाषा, क्योंकि नाट्य भाषा समस्त रंगमंचीय संभावनाओं को अपने में आत्मसात् किए रहती है। उसमें लिखे गए एवं बोले गए शब्दों से भी अधिक ध्वन्यात्मकता, उसके शब्दों के बोलने के ढंग, वाक्य या शब्दों के बीच उपस्थित अंतराल, अनबोले, अनुपस्थित मौन या अधूरे वाक्यों या शब्दों अथवा उनकी भंगिमाओं में निहित रहती है। अर्थ ध्वनियों एवं अर्थछायाओं की गूँज नाट्य में नए अर्थ भरती है। दरअसल नाटकीय भाषा तो एक आधार प्रदान करती है, फिर प्रत्येक प्रस्तुति में अभिनेता अपने ढंग से अर्थ भरता है। इस प्रकार एक ही नाट्य की प्रत्येक प्रस्तुति अभिनेता, दर्शक, स्थान एवं परिस्थितियों के बदलने से भिन्न-भिन्न अर्थों को उद्घाटित करती है और यही नाट्य भाषा की विशिष्टता है।

डॉ. धर्मा ने विभिन्न अध्यायों में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक नाट्य के विविध आयामों पर प्रकाश डाला है और रंग-भाषा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए सूक्ष्म विश्लेषण किया है जो साहित्य एवं रंग अध्येताओं के लिए निश्चय ही लाभकारी एवं ज्ञानवर्द्धक होगा। उनकी साहित्य के प्रति निष्ठा व लगन इसी प्रकार बनी रहे, इसी शुभेच्छा के साथ...

—डॉ. रेखा गुप्ता
हिन्दी विभागाध्यक्ष
कानोड़िया पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर

Scanned with CamScanner